International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

छोटे उद्योगों का महिलाओं की आर्थिक सामाजिक स्थिति पर प्रभाव राजस्थान के संदर्भ में

डॉ. आराधना सक्सैना
सह. आचार्य, समाजषास्त्र
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज.)

सशक्तिकरण आमतौर पर एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला शब्द है जिसके द्वारा कमजोर व्यक्ति अपनी स्थिति से अवगत हो जाते हैं और सामूहिक रूप से सार्वजनिक प्रशासन या लाभ या आर्थिक विकास के लिए अधिक उल्लेखनीय पहुंच बढ़ाने के लिए लिखते हैं। शक्ति दो प्रकार की होती है। सर्वप्रथम, सशक्तिकरण की पहचान कुल मिलाकर गरीबों या उन व्यक्तियों से की जाती है जो शक्तिहीन हैं। दूसरा महिला सशक्तिकरण है।

राजनीतिक प्रतिबंध के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बुनियादी है। महिलाओं को अलग–अलग चरणों में एक साथ कई वर्षों तक कम किया जाता है, और इसी तरह उन्हें कमजोर रूप में ब्रांडेड किया जाता है और आगे के चरण को प्राप्त करने के अलावा उन्हें ढाल दिया जाता है। इस अनूठी स्थिति में, निर्णय लेने और परिवर्तन गतिविधि में उनकी अधिक उल्लेखनीय भागीदारी के लिए जागरूकता बढ़ाने और काम को सीमित करने के लिए सशक्तिकरण की आवश्यकता है। यह प्रक्रिया महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, विवाह आदि के संबंध में व्यक्तिगत जीवन में निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है। महिला के जीवन भर अलग–अलग फैसले देना रिश्तेदारों, संस्थागत और सामुदायिक समर्थन पर निर्भर करता है। परिवार म पुरुष व्यक्ति को प्रदाता माना जाता है, भौतिक और वित्तीय संसाधन उसके नाम और नियंत्रण में होते हैं, आमतौर पर सत्ता उसके हाथ में होती है। महिलाओं को संसाधनों तक पहुंच और नियंत्रण से वंचित किया जा रहा है, उन्हें सत्ता का दावा करने से रोका जा रहा ह। दरअसल, समुदाय के कारण भी, सार्वजनिक संपत्ति संसाधन, नींव और राजनीतिक शक्ति पुरुषों के हाथों में पैक की जाती है। महिलाओं को इस क्षेत्र से दूर रखा जाता है। इस स्थिति में महिलाओं को संसाधन दर्शन और स्वयं पर नियंत्रण करके शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। महिला सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता है। जैसा भी हो सकता है, सशक्तिकरण सत्ता तक ही सीमित नहीं है। यह व्यापक और विशिष्ट आयामों के साथ एक बड़ा और अधिक व्यापक विचार है।

परिचय

महिला अंगों को परिवार के पुरुष प्रदाताओं की सहायता में प्रजनन और घरेलू के रूप में देखा जाता है और इस प्रशिक्षण ने महिलाओं को एक अधीनस्थ भाग को स्वीकार करने के लिए अनुकूलित किया है। इन स्थितियों में अधिक युवा महिलाओं को स्कूलों में लाना स्पष्ट रूप से एक आवश्यकता नहीं है, बल्कि स्पष्ट रूप से, शिक्षा महिला सशक्तिकरण के अनिवार्य मार्करा में से एक है। इस मामले की सच्चाई यह है कि महिलाओं को हालांकि औपचारिक कामकाजी माहौल से काफी हद तक गायब कर दिया गया है और इसके परिणामस्वरूप आधिकारिक श्रम अंतदृष्टि से, सभी चीजों को कृषि और अर्थव्यवस्था के आकस्मिक विभाजन के साथ गहन रूप से व्यस्त माना जाता है। महिलाओं के वेतन को अनुभाग में रखने के लिए लगातार जोर दिया जा रहा है ताकि इस स्थिति को मजबूत किया जा सके कि महिलाएं केवल पुनरुत्पादक हैं और निर्माता नहीं हैं।

जबकि महिलाओं को सरकारों के निचले स्तरों में खराब तरीके से बोला जाता है, व निर्णय लेने के अधिक कुलीन वर्गों में अभी भी दुर्लभ हैं। सरकारों के ढाँचों से महिलाओं की गैर–मौजूदगी का अनिवार्य रूप से तात्पर्य यह है कि राष्ट्रीय, प्रांतीय और आस–पास की जरूरतें यानी संसाधनों का वितरण सामान्य रूप से महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान के बिना किया जाता है, जिनके लाभकारी अनुभव उन्हें समुदाय की जरूरतों, चिंताओं और उत्साह के बारे में एक वैकल्पिक जागरूकता देते हैं। पुरुषों का।

ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी में कमी केंद्र और राज्य दोनों सरकारों की रणनीति योजना पर अधिक बनी हुई है क्योंकि आज की तारीख में गरीबी रेखा से नीचे की आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इस प्रकार पिछले दशकों में किए गए प्रयासों की प्रगति के बावजूद, भारत में ग्रामीण गरीबी गंभीर बनी हुई है। देश के विकास पर गरीबों की इतनी व्यापक आबादी का प्रतिकूल प्रभाव बहुत अधिक है। हमारे देश में गरीबों की संख्या अधिक होने के कारण उनकी मदद करने के लिए वर्षों से एक बहु–कार्यक्रम और बहु–संगठन दृष्टिकोण अपनाया गया है। एसजीएसवाई पर जोर देने से पहले पूर्व में लागू की गई विभिन्न परियोजनाओं के बारे में नीचे चर्चा की गई है।

एकीकृत ग्रामोण विकास कार्यक्रम (आईआरडीपी) जिला ग्रामीण विकास एजेंसी (डीआरडीए) के माध्यम से लागू किया गया था और जमीनी स्तर पर, वर्ग स्तर के कर्मचारी कार्यक्रम कार्यान्वयन के प्रभारी थे। इस कार्यक्रम के तहत गैर–खेती अभ्यासों को सक्रिय करने के लिए अलग–अलग के लिए वितरित किए गए कुल हिस्से के प्रत्येक पैसे के लिए 20 के साथ नींव विकास को महत्व दिया गया था। ग्रामीण गरीबों के लिए अतिरिक्त मजदूरी और स्वरोजगार व्यवसायों के निर्माण के लिए मध्यस्थता करने पर, परिवार और सामाजिक अलगाव की भारी लागत पर ग्रामीण आबादी के अपने घर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के बाहर व्यापक पैमाने पर स्थानांतरण से रणनीतिक दूरी बनाए रखने पर भरोसा किया गया था। समूह आधारित प्रयासों को योजनाएं देने या प्रोत्साहित करने में एसएचपीए सहायक प्रतीत होता है। इस तथ्य के बावजूद कि यह अपने आप में व्यवहार्यता या व्यवहार्य रिटर्न सुनिश्चित नहीं करता है, विशष रूप से एकत्रित प्रयासों की जन्मजात परेशानियों को देखते हुए। आम तौर पर सामूहिक उपक्रमों में व्यवहार्य होने के सभी संकेत थे, लेकिन स्व–सहायता समूह के व्यक्तियों के लिए मामूली कम आय के साथ।

पेरियार ई.वी. रामासामी, बीसवीं सदी के एक भयानक सामाजिक क्रांतिकारो ने महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों में सुधार के लिए काम किया। उन्होंने महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने, अस्पृश्यता को समाप्त करने और जाति के आलोक में भेदभाव की समान आवश्यकता बताई। उन्होंने खेद व्यक्त किया कि राष्ट्र की जनशक्ति के प्रत्येक पैसे क लिए लगभग महिलाओं की अधीनता के कारण बर्बाद हो गए। उन्होंने न केवल ब्राह्मण पुजारियों और ब्राह्मणवादी रीति–रिवाजों को ब्लैकलिस्ट करने के लिए स्वाभिमान विवाह ढांचे को आगे बढ़ाया, बल्कि शादी के जोड़ों को स्वतंत्रता और समानता का एक और विचार दिया। उन्होंने दहेज पुनर्विवाह को ऊर्जा दी, महिला सशक्तिकरण ही सीधे तौर पर गर्भाधान रोकथाम को बढ़ावा देगा और यह परिवार नियोजन के लिए एक बेहतरीन तकनीक में बदल सकता है। विशेष रूप से महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति को आगे बढ़ाने और सर्वांगीण विकास का आकर्षित करने के लिए देश और विदेश के विभिन्न हिस्सों में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला विकास आंदोलन को प्रस्तुत किया गया है। स्व–सहायता समूह के माध्यम से महिला विकास का लक्ष्य महिलाओं को हर तरह से सशक्त बनाना है, जब कहा जाता है कि सब कुछ हो गया है, लेकिन विशेष रूप से लक्ष्यों पर ध्यान दिया जा सकता है।

(ए) ग्रामीण महिलाओं से उनके बुनियादी सरोकारों पर विशिष्ट दृष्टिकोण साझा करने के लिए एक विशिष्ट मंच बनाने के लिए समूह बनाने का आग्रह करना।

(बी) उनके सामाजिक आर्थिक, स्वास्थ्य, संस्कृति, राजनीतिक और वैध मुद्दों की पहचान करने वाले विभिन्न मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए।

(ब) भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए छोटी बचत के माध्यम से एक विशिष्ट स्टोर बनाने के लिए सभा के सदस्यों के बीच बचत और ऋण की प्रवृत्ति को सिखाना।

(डी) महिलाओं और बैंकों के स्वयं सहायता समूह के बीच संबंध स्थापित करने के लिए।

(ङ) विभिन्न अभिलेखों यथा निर्धारण बही, अभिलेख बही, रोकड़ बही को उचित रूप से रखने के लिए उन्हें तैयार करना।

(च) सीमित कार्य करने के लिए सदस्यों को विशेष और तार्किक शिक्षा प्रदान करना और इकट्ठा करने या अलग–अलग आय सृजन अभ्यासों का प्रयास करना।

(छ) प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त क्षमताओं और शिक्षा का उपयोग करके ग्रामीण गरीब महिलाओं को उनकी आर्थिक स्थिति को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाना।

(ज) वर्तमान स्व–सहायता समूह के बीच सिस्टम प्रशासन को आगे बढ़ाने और बनाने के लिए।

(झ) सामाजिक विकास की प्रक्रिया को अधिक से अधिक उन्नत करने के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी को सशक्त बनाना।

स्व–सहायता समूह महिलाओं का एक चुनिंदा संघ है जिसमें महिलाएं तत्काल भागीदार होती हैं और इसी तरह उचित रूप से व्यवस्थित और प्रबंधित होती हैं। स्व–सहायता समूह में महिलाओं की महत्वपूर्ण सामान्य हिस्सेदारी है, जो उन्नत या जानबूझकर समूहों में बनाई गई थी। समूहों में इस तरह की बुनियादी हिस्सेदारी, मौलिक रूप से उनकी सम्मोहक भागीदारी और इसी तरह उनकी सभा के निर्णय लेने पर प्रभाव डालती है।

एक बार आर्थिक सशक्तिकरण पूरा हो जाने के बाद बेहतर बार्टरिंग पावर और जीवन की अन्य आवश्यक आवश्यकताओं के साथ क्रेडिट कार्यालयों की पहुंच के संबंध में सामान्य सामाजिक सशक्तिकरण पर सुझाव हैं। इकट्ठा करने के अभ्यास में आर्थिक ताकत के साथ महिलाओं की भागीदारी ने नए डेटा, क्षमताओं, संपत्ति की पहुंच और समग्र गतिविधि के बारे में जानकारी के लिए स्व–चित्र उन्नत पहुंच को प्रेरित किया। यह घर और समुदाय दोनों में निर्णय लेने की उनकी क्षमता को बढ़ाता है।

इन स्व–सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं छोटे पैमाने पर ऋण की तलाश में आय आयु अभ्यास के अलावा स्वास्थ्य, पोषण, कृषि, रेंजर सेवा, सामाजिक जागरूकता आदि जैसे मुद्दों के दायरे को दूर करती हैं।

छोटे उद्योगों का महिलाओं की आर्थिक सामाजिक स्थिति पर प्रभाव

20 लाख महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक लाख स्वयं सहायता समूह स्थापित करने के लिए गैर सरकारी संगठनों को शामिल किया गया है। स्व–सहायता समूह की शुरुआती बिंदु से भागीदारी ने उन्हें आय आयु अभ्यास में गतिशील भागीदारी लेने के लिए प्रेरित किया। अभिनवरुद्दी इन समूहों के सदस्यों को छोटो बचत शुरू करने के लिए राजी और आग्रह करता है।

1960 में संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक समानता आंदोलन के बीच सशक्तिकरण का विचार शुरू हुआ। उस बिंदु से आगे, इसे आधार प्रक्रिया और परिणाम के रूप में विभिन्न पाठ्यक्रमों में व्याख्यायित किया गया हैय व्यक्तिपरक और लक्ष्य,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

व्यक्तिगत और समग्र, आंतरिक और बाहरी, दुनिया भर में और आस–पास। इस तथ्य के बावजूद कि यह अप्रत्याशित है, आज इसका उपयोग व्यवसाय, सामाजिक कार्य, विकास और लैंगिक समानता जैसे क्षेत्रों के एक भाग के रूप में किया जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं को अभी भी पुरुषों से कमजोर और निजी दायरे तक सीमित माना जाता है। संरक्षणवादी और रीति–रिवाजों से संचालित भारतीय समाज ने महिलाओं के स्थान के रूप में परिवार इकाई को बच्चों और अन्य घरेलू कार्यों के विकास और पाठ्यक्रम के प्रमुख तत्वों में बांट दिया। ऐसे दश में विकास शायद ही पूरा किया जा सकता है, जहां मानव संपत्ति का आधा हिस्सा बनाने वाली महिलाओं को वास्तव में विकास तकनीकों में एकीकृत नहीं किया जाता है।

भारत में, महिलाओं का सशक्तिकरण केंद्रीय मुद्दा है क्योंकि महिलाएं कई सामाजिक संकेतकों में पुरुषों से पीछे हैं, उदाहरण के लिए, शिक्षा, सरकारी मुद्दे, स्वास्थ्य और रोजगार जो इस प्रकार विकास की प्रक्रिया में बाधा डालते हैं। आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का वित्तीय सशक्तिकरण काफी हद तक बुनियादी है। भारत, दो दशकों से अपने आर्थिक विकास में दृष्टिकोण में परिवर्तन की सीमा पर है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि महिलाओं को ऐसे कार्यालयों से सुसज्जित किया जाए जो लैंगिक समानता और प्रबंधनीय विकास में सुधार करें।

हर सरकारी परियोजना में या तो सराय और महिलाओं की बहाली या प्रशिक्षण, कौशल विकास और रोजगार महिलाओ के लिए खुले दरवाजे आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है, हालांकि एक अधिक व्यापक और सभी समावेशी कार्यक्रम जो महिला विकास के हर एक हिस्से को सुरक्षित करता है, के लिए आवश्यक था। महिलाओं के सशक्तिकरण की दर का विस्तार करना।

गरीब वर्गों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रायोजित ग्रामीण धन रखने वाली योजनाओं की निराशा के कारण स्व–सहायता समूह का माइक्रोफाइनेंस मॉडल भी काफी हद तक बढ़ गया।

स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना ग्रामीण क्षेत्रों में किफायती स्वरोजगार के सभी हिस्सों को कवर करने वाले छोटे पैमाने के उपक्रमों की एक व्यापक प्रणाली है, जिसे भारत सरकार द्वारा पहली अप्रैल 1999 को पूरे देश में हाशिम समिति की सिफारिशों पर लागू किया गया था। एसजीएसवाई ग्रामीण गरीबों के स्वरोजगार के लिए एक वाहन है।

जिला ग्रामीण विकास एजेंसी और व्यवस्था द्वारा कार्यान्वित किया जाता हय जिले में पंचायती राज संस्थाओं, गैर–सरकारी संगठनों, बैंकों तथा अन्य वित्तीय एवं विशिष्ट संगठनों की जाँच एवं क्रियान्वयन प्रक्रिया में शामिल होंगे। यह गरीबों, विशेष रूप से महिलाओं की सक्रियता और समूहों में तैयार होने की कल्पना करता है जिसे आमतौर पर स्वयं सहायता समूहों के रूप में जाना जाता है। सरकार द्वारा लगाई गई इन परियोजनाओं का बड़ा हिस्सा गरीबों, असहायों और एसटी, एससी और ओबीसी वर्ग से संबंधित महिलाओं और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों की ओर केंद्रित है।

सभी योजनाओं में, स्व–सहायता समूह आंदोलन इस आधार पर अधिक व्यवहार्य है कि यह महिलाओं को वित्तीय प्रेरणा देने के साथ–साथ उन्हें नेतृत्व की गुणवत्ता, आत्मविश्वास निर्माण, सामाजिक व्यवस्था प्रशासन, श्रेणीबद्ध कौशल, व्यवसाय प्रबंधन, बाजार और वर्तमान की जानकारी प्रदान करता है।

सशक्तिकरण एक बहआयामी प्रक्रिया है क्योंकि इसमें मानसिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण शामिल है। मानसिक सशक्तिकरण का उद्देश्य विलक्षण चरित्र, आत्म–चित्र, आत्म–सम्मान का विस्तार करना और क्षमताएँ बनाना है, हालाँकि सांस्कृतिक सशक्तिकरण में लैंगिक मानकों और मानका पर पुनर्विचार करना और सांस्कृतिक प्रथाओं का पुनरुत्पादन करना शामिल है।

महिलाओं और विकास के संबंध में, महिला सशक्तिकरण में महिलाओं के लिए निर्णयों का विस्तार और महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में विस्तार शामिल होना चाहिए।

सशक्तिकरण किसी के सामाजिक–राजनीतिक वितरणध्परिस्थिति की समझ और नियंत्रण बढ़ाने की एक प्रक्रिया है, परिवर्तन को सशक्त बनाने वाले कौशल की प्राप्ति, और परिवर्तन को प्रभावित करने में संयुक्त रूप से काम करना। सशक्तिकरण में सीखने और संसाधनों तक अधिक उल्लेखनीय पहुंच शामिल है, उन्हें (महिलाओं) को सशक्त बनाने के लिए निर्णय लेने में अधिक उल्लेखनीय स्वशासन शामिल है ताकि उनके जीवन को डिजाइन करने की अधिक उल्लेखनीय क्षमता हो या उनके जीवन को प्रभावित करने वाली स्थितियों पर अधिक प्रमुख नियंत्रण हो।

विलफुल सेगमेंट ने विभिन्न विकास गतिविधियों विशेषकर महिला सशक्तिकरण पद्धतियों में व्यापक रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है। गैर–सरकारी संगठन विशेष रूप से स्वयं सहायता विकास के माध्यम से महिलाओं को बचत और मितव्ययिता के लिए प्रेरित कर रहे हैं और इसी तरह उन्हें छोटे पैमाने पर क्रेडिट और बैक के माध्यम स आर्थिक रूप से लाभदायक गतिविधियों से पूरी तरह से जोड़ रहे हैं।

स्व–सहायता समूह गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण की एक तकनीक है। इसके अलावा, उन्होंने देखा कि अंदर के गाँवों में समूहों से, नियोजित कुलों को बाहरी गाँवों और अलग–अलग थ्रो प्राप्तकर्ता परिवारों की डिग्री से लाभान्वित नहीं किया गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उत्तरदाताओं का प्रमुख भाग परिवार के मध्यम आकार का था। शहरी क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह सामान्य आबादी के जीवन स्तर को बढ़ाते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह रोजगार के अवसरों को आगे बढ़ाते हैं। हालांकि, ब्याज की कम खर्चीली दर, सरल पुनर्भुगतान ढांचे और संतोषजनक अग्रिम राशि के बावजूद सूक्ष्म ऋण के तेज संवितरण के संबंध में उत्तरदाताओं को संतुष्टि नहीं मिलती है। शहरी स्वयं सहायता समूहों की बचत ग्रामीण स्वयं सहायता समूहों की तुलना में तीन गुना अधिक है।

यह पाया गया कि माइक्रो क्रेडिट और समूह गतिविधियों के लिए महिलाओं की शुरूआत ने आत्म–सम्मान की अधिक उल्लेखनीय भावना पैदा की है और परिवार इकाई निर्णय लेने में अधिक भागीदारी को सक्रिय किया है। एक खाता प्रक्रिया के प्रबंधन के लिए समान परिचय के लिए समूहों के अग्रदूतों की बारी आवश्यक पाई गई।

व्यक्त किया कि स्व–सहायता समूह के सदस्य आर्थिक सशक्तिकरण प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं और इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न मुद्दों के प्रति समूह जागरूकता में शक्तिशाली भागीदारी के माध्यम से बैंकों, सह–एजेंटा, ब्लॉक विकास कार्यालय, स्कूलों आदि से परिचित होने के माध्यम से सामाजिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास किया। स्वयं सहायता समूह के सदस्य अपने गाँवों में सामाजिक गतिविधियों में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए उत्कृष्ट थे।

महिला मुद्दे एक प्रशंसनीय कदम हैं लेकिन समाज के मौलिक दृष्टिकोण में क्या संभाला जाना चाहिए जो असामान्यता को बढ़ावा देता है। आज, अर्थव्यवस्था के सभी हिस्सों में महिलाओं की चिंताओं का स्वागत किया गया है। बहरहाल, कसौटी इन्हें हकीकत में बदलने में है। यदि भारत को नए हजार साल में एक अंतदृष्टिपूर्ण देश के रूप में चलना है तो महिला को विकसित होना चाहिए और सकारात्मक आत्म–चित्र होना चाहिए।

बदलती आर्थिक स्थिति ने महिलाओं को उनके लिए लगातार आय सुनिश्चित करने के लिए व्यवसाय करने के लिए प्रभावित किया है। वे अपने समूह के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए खुद को समूहों या सहकारी समितियों के रूप में आकार देने के लिए आगे बढ़े हैं।

महिलाओं को एक शिखर संघ की आवश्यकता होती है जो उनकी गतिविधियों को सुविधाजनक बना सके, उनके उपहारों को प्रत्यक्ष, मजबूत और उपयोग कर सके। उन्होंने पदों को लेने का साहस किया, जो अपेक्षित रूप से लोगों के लिए आरक्षित थे और संगीत से चंद्रमा तक चले गए। निष्कर्ष के तौर पर यहां यूनिसेफ की भावना महत्वपूर्ण है महिलाएं पितृत्व या घरेलू अंगों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्हें महिलाओं के हिस्से की समग्रता में पाया जाना चाहिए।

ग्रामीण स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने सबसे अधिक 95.33 प्रति पैसा की बचत प्रवृत्ति पैदा की और स्वयं सहायता समूहों में भाग लेने के कारण प्रत्येक पैसा के लिए 93.66 के अग्रिम लाभ को रेखांकित किया। आस–पास के शहर कस्बे का दौरा 5.33 प्रति पैसा, बिना किसी पूर्व संकेत के बैठक में जाएँ 5 प्रति पैसा, असाधारण पारिवारिक मुद्दे 3.66 प्रति पैसा, दूर–दराज के स्थानों पर प्रशिक्षण 1.33 प्रति पैसा, कम लाभ 0.33 प्रति पैसा, शामिल होने के कारण उपक्रम शुरू हुए स्वयं सहायता समूहों ने नामांकन बंद कर दिया – एक–चौथाई से अधिक, 26.67 सदस्यों क प्रत्येक पैसे के लिए पांच से अधिक प्रशिक्षण का अनुभव किया था, उनमें से प्रत्येक के लिए तीन–चौथाई से अधिक भाग 79.33 ने संचार की स्थिति की असामान्य स्थिति के माध्यम से प्राप्त किया था, अधिक प्रत्येक पैसे के लिए तीन–चौथाई 80 से अधिक के पास आचरण की तलाश मे डेटा की असामान्य स्थिति थी, उत्तरदाताओं के प्रमुख भाग ने प्रत्येक पैसे के लिए मध्यम से असामान्य स्थिति 92.33 को डेटा प्रदान किया था, प्रत्येक पैसे के लिए आर्थिक प्रेरणा 81.33 की असामान्य स्थिति थी। उत्तरदाताओं के प्रत्येक पेनी के लिए लगभग 91 के पास प्रत्येक लिए 84.34 की आविष्कारशीलता और खतरे की झुकाव की असामान्य स्थिति थी। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के पेनी पर पेनी में उपलब्धि अभिप्रेरणा की मध्यम से असामान्य स्थिति होती है।

निष्कर्ष

दिशा–निर्देशों की दृष्टि से ये प्रयास विशाल और अचूक रहे हैं, क्योंकि कुछ लोग केवल आर्थिक, कुछ राजनीतिक और कुछ मनोवैज्ञानिक आयामों के लिए सशक्तिकरण का तर्क देते हैं। ये अंतर महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण पर प्रभाव को सीमित करते हैं और तदनुसार इस मुद्दे को बहस योग्य बनाते हैं। यह अध्ययन महिला सशक्तिकरण पर एक बहुआयामी पैमाना विकसित करने के बारे में है ताकि रैखिकता पर आयामों की प्रतिबंधात्मकता स्थापित की जा सके।

स्वयं सहायता समूहों के कृषि संसाधनों, वन्य संसाधनों, सूचना धारा के धन बचत लाभ विश्लेषण आदि के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना, सूचना तकनीकी परिप्रेक्ष्य से देखा जाना आवश्यक है। इसके बाद से यह प्रणाली वितरित और गैर–वितरित साहित्य पर आधारित है, आईटी विशेषज्ञों, विविध बैंकों के शाखा प्रबंधकों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, भूगोलवेत्ताओं और विभिन्न शिक्षाविदों के साथ गहन चर्चा।

सूक्ष्म् वित्तर के माध्यिम से महिला सशक्तीऔकरण में सूचना प्रौद्योगिकी का हिस्साा और ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रयोग के लिए आवश्यशक सूचना के आलोक में वैचारिक ढांचा तैयार करना।

दूसरे, सूक्ष्म वित्त में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग की खोज करना। तीसरा, एक वैचारिक ढाँचा तैयार करना कि सूचना प्रौद्योगिको के परिणामों को ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर जनजातीय गाँवों में कैसे प्रसारित किया जा सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महिला सशक्तिकरण की कल्पना तभी की जा सकती है जब व्यक्तियों को उनके मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र होने के लिए प्रेरित, एकत्रित और संगठित किया जाता है। यह महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने में मदद करता है। केंद्र सरकार ने हर साल ढेरों अभिनव योजनाएं बनाई हैं और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए केंद्रीय व्यय योजना में पर्याप्त वित्तीय आवंटन किया गया है। हालाँकि, आँकड़े प्रदर्शित करते हैं कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए योजनाओं और केंद्रीय भंडार का उपयोग असाधारण रूप से बाधित है क्योंकि राज्यों द्वारा धन हस्तांतरित नहीं किया जाता है।

यह स्पष्ट है कि स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को विभिन्न वित्तीय गतिविधियों, उदाहरण के लिए, बचत, उधार, योजना और निधियों को घुमाकर सशक्त किया जाता है। स्व–सहायता समूह द्वारा आयोजित विभिन्न प्रेरक कार्यक्रमों और योजनाओं के कारण महिलाएं वास्तव में आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बन रही हैं।

संदर्भ सूची

1. अर्जुन वाई. पंगन्नवर (2020), महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम और ग्रामीण गरीबीय ए माइक्रो स्टडी, सदर्न इकोनॉमिस्ट, 49(4)य 15 जून, पीपी 23–25
2. अरुमुगम, आर. (2019), महिला अधिकारिता, तमिलनाडु जर्नल ऑफ कोऑपरेशन, दिसंबर, पीपी 33–35
3. चव्हाण, वी.एम. और मुकुंद एम. मुंदरगी (2020), माइक्रो फाइनेंस एंड फाइनेंशियल इनक्लूजन ऑफ द पुअर सेल्फ हेल्प ग्रुप बैंक लिंकेज, सदर्न इकोनॉमिस्ट, 49(14) 15 नवंबर, पीपी 14–16
4. दिलन सिंह एस (2020), सेविंग एप्रोच ऑफ सेल्फ–हेल्प ग्रुप मेंबर्स ए स्टडी विद रेफरेंस टू मणिपुर, प्रज्ञान, 39(1) अप्रैल–जून
5. दिव्य निनाद कौल और गिरीश मोहन (2019), महिला स्वयं सहायता समूह और सूक्ष्म वित्त, कुरुक्षेत्र, 57(4) फरवरी, पीपी23–37
6. ज्योतिष प्रकाश बसु (2019), सूक्ष्म वित्त और महिला अधिकारिता, पश्चिम बंगाल के विशेष संदर्भ में एक अनुभवजन्य अध्ययन,
7. कलावती, एम.एस., और लीला, वी. (2018), माइक्रो क्रेडिट इन विल्लुपुरम डिस्ट्रिक्ट, किसान वर्ल्ड, 35(4) अप्रैल।
8. लक्ष्मीनारायण रामनाथन और गौरव ए.एम (2020), एसएचजीबैंक लिंकेज प्रोग्राम में वाणिज्यिक बैंकरू एसबीआई का एक विश्लेषण, दक्षिणी अर्थशास्त्री, 49(13) 1 नवंबर।
9. मानस पांडे (2019), माइक्रो फाइनेंसय गरीबी उन्मूलन के लिए एक साधन, भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक अध्ययन, द इंडियन जर्नल ऑफ कॉमर्स, 62(2)
10. मंजू पंवार (2020), हरियाणा के ग्रासरूट डेमोक्रेसी एक्सपीरियंस को मजबूत करने में स्वयं सहायता समूह की भूमिका, कुरुक्षेत्र, 58(12) अक्टूबर

Corresponding Author

डॉ. आराधना सक्सैना

सह. आचार्य, समाजषास्त्र

राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राज.)

Email- aradhanasaxena14@gmail.com